सूर्यबाला की कहानियों में अपराधबोध

सुनील कुमार .एस. यादव

पीएचडी छात्र, उच्छ शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास, (धारवाड़ शाखा) धारवाड़ कर्नाटक-०१

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 07 August 2018

Keywords
समकालीन हिंदी साहित्यकार, कष्ट, अभाव, भय, विडंबना, सूर्यबाला

***Corresponding Author**
Email: sunilyphd[at]gmail.com

ABSTRACT

समकालीन हिंदी साहित्यकारों में सूर्यबाला जी का नाम विशिष्टतम हैं वे अपानी रचना के माध्यम से परिवार और समाज के उन प्रश्नों और प्रसंगों पर लेखनी चलाती हैं । इसलिए हिंदी साहित्य जगत में महिला कथाकारों में कहानीकार, उपन्यासकार, व्यंग्यकार के रूप में सूर्यबाला जी का विशिष्ट स्थान- मान प्राप्त हैं। ऊन्होने उच्च वर्ग से निम्न वर्ग तक लेखनी चलाकर, संवेदनाओं को प्रकट कर जीवन-मूल्यों को विशेष महत्व दिया है। शायद इसलिए उनकी कहानियों के सभी पात्र कष्ट, अभाव, भय, विडंबना और मज़बूरीयों के बीच जीते हुए भी हिम्मत बटोरकर डटकर सामना करते हुए तथा जीवन में खुशियाँ तलाशा करते हुए नजर आतें हैं।उनकी सभी कहानियाँ केवल कल्पना पर आधारित न होकर ठोस अनुभव और अटल सत्य पर आधारित हैं। सूर्यबाला की कहानी की नारी डटकर मुश्किल से मुश्किल चुनौतियों का सामना करना, बाजारवाद के सामने भी न झुकना, निराशा में घिरकर भी आशा बनाये रखना और तुफानो में भी दीप जलाये रखना यानी अंतिम सांसों तक डटकर रहना आदि हर कहानी के नारी में कूट कूट के भरे हुए गुण सहजता से मिलाजातें हैं।अपने परिवार के सदस्यों के लिए उनके सुख के लिए अपने सारे सपने और अपना सारा जीवन तक त्याग करने वाली गुणों की नारी कहानियों में चित्रित हैं जो साहित्य की उच्च कोटि नारी भी कहलातीं हैं। सूर्यबाला जी के सभी कहानियों में नारी कष्ट झेलती हैं लेकिन हारती नहीं, निरंतर कष्टों को दूर करने के प्रयत्न में हमेश तत्पर रहती हैं। कभी-कभी इनको आवाज भी उठानी पड़ता हैं लेकिन कभी पीछे नहीं हटती हैं, आवश्यकता होने पर जवाब भी देती हैं।

समकालीन हिंदी साहित्यकारों में सूर्यबाला जी का नाम विशिष्टतम हैं वे अपानी रचना के माध्यम से परिवार और समाज के उन प्रश्नों और प्रसंगों पर लेखनी चलाती हैं जो कई बार परिचित से लागतें हैं लेकिन होते नहीं हैं। इसलिए हिंदी साहित्य जगत में महिला कथाकारों में कहानीकार, उपन्यासकार, व्यंग्यकार के रूप में सूर्यबाला जी का विशिष्ट स्थान- मान प्राप्त हैं। उन्होंने गाँव से शहर, शहर से महानगर और विदेशी धरा पर भी अपनी छवि को उभारा है। उच्च वर्ग से निम्न वर्ग तक लेखनी चलाकर, संवेदनाओं को प्रकट कर जीवन-मूल्यों को विशेष महत्व दिया है। शायद इसलिए उनकी कहानियों के सभी पात्र कष्ट, अभाव, भय, विडंबना और मज़बूरीयों के बीच जीते हुए भी हिम्मत बटोरकर डटकर सामना करते हुए तथा जीवन में खुशियाँ तलाशा करते हुए नजर आतें हैं। सूर्यबाला जी ने जीवन, समाज, परंपरा और उनसे जुड़ी समस्याओं को अपनी खुली आँखों से देखने का प्रयास करती नजर आती हैं। उनकी सभी कहानियाँ केवल कल्पना पर आधारित न होकर ठोस अनुभव और अटल सत्य पर आधारित हैं। अब तक प्रकाशित तेरह कहानी-संग्रह, पाँच उपन्यास, चार व्यंग्य-संग्रह एवं बालकथा ने उनके साहित्य-लेखन को समृद्ध किया है।

इनकी 'पांच लम्बी कहानियाँ' मनोवौज्ञानिक धरातल पर मानसिक अंतर्दशाओं का अभिव्यंजन करती नजर आती हैं। जो संवेदन की पूंजी से समृद्ध हैं और अतिशय भावुक हुए पारिवारिक-सामाजिक विसंगातियें को उदघाटित करती हैं। तो 'गृह प्रवेश' आर्थिक दबाव में अनचाहे समझौतोंकी विवशता पर सोचने पर मजबूर करता हैं । 'भुक्खड़ की औलाद' एक शिक्षित, किन्तु बेरोजगार व्यक्ति की करुण भरी कहानी है, जो पारिवारिक मातृत्व और मानवीय संवेदना को तिलांजलि देने के बावजूद भी जीवन की दारुण परिस्थितियों से उबर नहीं पाता हैं।'मानसी' में किशोर मन की उस निगूढ़ भावानुभूति का चित्रण है, जो नीति, उम्र और आचार-संहिता के परे आजीवन अभिन्न सहचरी बनी रहती है।'मटियाला तीतर' एक अशिक्षितकिन्तु बुद्धिमान व् स्वाभिमान बालक का

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

आख्यान है, जो आर्थिक विषमता में भी पारिवारिक प्रेम, आत्माभिमान और मुक्त जीवन-शैली को नहीं भूल पाता हैं। 'अनाम लमहों के नाम' में मध्य वर्गीय संकुचित मनोवृत्ति, स्वार्थपरता, संवेदनाशून्यता और अमानवीयता पर चित्रण हैं जिसमें नई पीढ़ी पर इन सभी का दुष्प्रभाव का भी उल्लेख मिलता हैं।

इन कहानियों में जहाँ एक तरफ मानवीय संवेदनाओं को मनोवैज्ञानिक तत्वों पर रेखांकित करने का प्रयास हैं तो वहीं दूसरी तरफ मूल्यहीनता, भ्रष्टता, सांप्रदायिक संकीर्णता, आर्थिक विपन्नता, मानवीय संबंधों की कृत्रिमता, अमानवीय स्वार्थपरता स्पष्ट चित्रण भी देखने को मिलता हैं। 'एक टुकड़ा कस्तूरी' बारह प्रेम कहानियों का अनूठा संग्रह हैं जिसमें हर कहानी स्मृति की कहानियाँ हैं। सूर्यबाला की सभी कहानियों के सभी पात्र विरोध और संघर्ष विध्वंसक न होकर विश्वसनीय और विवेक सम्मत होने पर ज्यादा जोर देते हैं। 'कागज़ की नावें चांदी के बाल' एक प्रतीकात्मक कहानी हैं लडके लड़की द्वारा किशोरावस्था में साथ बिताये क्षणों की मधुर यादे हैं जो सहज और निष्पाप हैं। 'न किन्नी न' कहानी में अत्यंत गरीब किरण समृद्ध सपन्न मौसी और उसकी बेटी रोजी की उतराने कपड़ो और जूतियों पर पलती हैं। और हर बार किन्नी को अपने सपने और इच्छाओं को न चाहते हुए भी मज़बूरी में तिलांजलि देना पढ़ता हैं। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के बावजूद सम्मान, प्रेम, अपनत्व के हर इंसानी अधिकार से बार-बार होती किन्नी तिरस्कृत होती हैं। भारतीया समाज में स्त्री की विडंबना का मर्मस्पर्शी यथार्थ यहाँ देखने को मिलता हैं।

'लाल पलाश के फूल नहीं ला सकूंगा' कहानी द्विआयामी हैं जिसमें एक और अनूप के मन में वृंदा को लेकर किशोरावस्था की मीठी यादें हैं तो दूसरी ओर वृंदा के पिता राखाल बाबू के साथ हुए अन्याय का चित्रण हैं। ' बिन रोई लड़की' में अछूते प्रेम की ऐसी मर्मस्पर्शी कहानी हैं, जो पाठक को अंदर तक रुला देती हैं। लड़की के द्वारा अव्यक्त प्यार की तलाश और उसकी बेबसी को चित्रित किया गया हैं। 'पीलों फूलों वाली फ्राक' में आनाम अनबूझे मोहब्बत की दास्ताँ हैं। गृहणी के सामने एक दिन एक अजनबी लड़का मिलने आता हैं गृहिणी को कुछ याद नहीं है लेकिन उसे सब याद हैं। वह लड़का किशोरावस्था में इस लड़की जो आब गृहिणी हैं उससे मिला था। इन्होने मध्यवर्ग की मानसिकता को इस कदर सूक्षमता के साथ पकड़ने और अत्यंत सहज स्वाभाविक दैन्दिन प्रसंगों के माध्यम से मार्मिक ढंग से अभिव्यक्ति देने का प्रयास हैं। 'सजायाफ्ता','वे जरी के फूल','दिशाहीन' आदि कहानियों में एक गरीब घर की बेटी आमिर परिवार में आना मानों उम्रकैद की सजा ऐसे चित्रण मिलता हैं। इनकी सभी कहानियों में नायिकाएँ निष्काम कर्मयोगी हैं उनकी कर्मनिष्ठा और पुरुषार्थ के आगे सभी नायक बैने दिखाई देतें हैं।

आज सर्वत्र स्त्री विमर्शा के बहाने उसकी अस्मिता, स्वतंत्रता पर बहस छिड़ी हुई हैं किन्तु सूर्यबाला की हर स्त्री ने पहले ही साबित कर दिया है कि वह अबला नहीं सबल हैं। जैसे गीता चौधरी, कौमुदी या ' गैस' की अध्यापिका या फिर सुमित की पत्नी विनीता आदि महिलायें अपने लिए लक्षमण रेखा खिंच लेतीं हैं जिसका वह उल्लंघन भी नहीं करना चाहती हैं शायद इस उल्लघंन का दुस्परिणाम वे जानती हैं। सूर्यबाला की कहानियों की हर स्त्री रामायण की सीता की तरह विवेकशील हैं और आदर्श हैं, आत्मगर्भ है ,स्वयंसिद्धा है, कल्याणी है तभी तो बेटी बहिन पत्नी माँ भाभी बहु के रूप में कुटुंब का कल्याण करती रहती हैं लेकिन अपने बारें में तनिक भी नहीं सोचती हैं। 'रमण की चाची' में चाची लाचार, प्रताड़ित और सतायी हुई स्त्री की कहानी हैं जिसे घर की स्त्रियाँ बेलज्ज, बेगैरत और निकम्मा कहकर अपमानित करती हैं। इनकी कई कहानियों में नारियाँ पति की वास्तविक सहचरी बनती हैं जैसे 'मुक्ति पर्व' में पत्नी अपने पति के साथ हुए अन्याय का विरोध करती हैं तो 'गृह प्रवेश' संग्रह की 'होगी जय होगी जय''हे प्रुशोत्तम' में नविन की पत्नी व्यवस्था से जूझते पति को अपना पूरा समर्थन और सहयोग देती हैं। कुछ कहानियों में पुरुष प्रधान व्यवस्था के प्रति नारी के आक्रोश और विद्रोह भाव की अभिव्यक्ति हुई हैं जैसे 'दूज की टिका' की बहन और 'सिर्फ मैं' में की पत्नी अपने आक्रोश को सार्वजनिक करती हैं।

'रहमदिल','मुंडेरपर' की आदिकांश कहानियाँ नारी की नियति से संबंधित हैं। 'आनाम लम्हे का नाम, वे जरी के फूल, मुक्तिपर्व, गैस में, बगैर किसी विमर्श के अच्छादन के नारी मन के उल्लास - विश्हद ,यातना - संघर्ष से जुडी मन:स्थितियाँ वर्णित-विश्लेषित हैं। 'समापन''गीता चौधरी

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

का आखरी सवाल'‘सुमित्रा की बेटियाँ'‘उत्तरार्ध'‘आदमकद' आदि कहानियाँ भी नारी केन्द्रित हैं और अबला जीवन के प्रति कहानीकार की चिंताओं को कथातंक रचाव देने में सक्षम हैं। ‘सुन्म्मी की बात' में लड़की से औरत बनने का अनुभव हैं जिससे बहुत कुछ जुड़ता हैं जैसे पत्नीत्व , मातृत्व, घर की सुरक्षा, लेकिन बहुत कुछ पीछे भी छूट जाता हैं जैसे सुम्मी की निजता यानी सच्चाई। उसकी छोटी-सी सिसकी सुनकर ही भागकर आनेवाले माता-पिता अब कोई नहीं पूछता हैं।

‘अनाम लम्हे के नाम' की पत्नी जानते बुझते हुए पति के कुकृत्य को सही ठहराती हैं तो ‘फूल टूटते हुए'‘न किन्नी न' की युवतियां अनमोल विवाह के लिए अभिशप्त हैं। ये कहानियाँ जताती है कि सविधान लागू हो जाने के दशकों बाद भी आम नारी के जीवन में अधिक परिवर्तन नहीं हुआ हैं। ‘आदमकद' में कुरूप और लगभग मौन रहने वाली नारी की कर्मनिष्ठा और स्वाभीमान की अभिव्यक्ति आत्यंत जिवंत और मार्मिक हैं। ‘कात्यानी - संवाद' संग्रह में संकलित कहानियाँ नारीं की पीड़ा ,बाल-मन की व्यथा और बूढ़ी पीढ़ी की यातना ये सब हृदयाहिनता के पर्याय हैं और कहानीकार इन्हें लेकर चिंतन और क्षुब्ध हैं। ‘गौरा गुनवंती' में संकलित हर कहानी टूटते रिश्ते और कम होते हुए विश्वासों की उधड पनकी पड़ताल करती हैं तथा समय और समाज की पीडाओं से रूबरू कराती हैं। ‘कपडे' में गरीबी दयानियता और लाचारी की ऐसा चित्रण हैं जो हमें संवेदित कर देता हैं। ‘आठारह वर्ष बाद' वात्सल्य के विछोह की मार्मिक जिवंत कहानी हैं तो ‘संताप' कहानी की करुणा उस माँ की है जिसका दर्द अनकहा होने पर भी दारूण हैं। ‘कौमुदी एक प्रश्न' युवा लाडकियों में हो रहे बदलाओं और पारस्परिक व्यवस्था के प्रति उभर रहे विद्रोह की कहानी हैं। इस कहानी में सूर्यबाला रुढियों से विद्रोह करती हैं, लड़कियों के प्रति हो रहे सामाजिक अवहेलना व अपमान के विरुद्ध वे बगावती भी करती नजर आती हैं। ‘कब्जा' कहानी अतीत की स्मुतीयों के ताने-बाने में बुनी हैं , बुजुर्ग बीमार पति का असहाय रूप में चित्रित करना जो कभी युवा और समर्थ था, एकालग तरह की अनुभूति को जगाता हैं। ‘मौजा' कहानी में कामकाज बेटे व् बहु सब कुछ बुजुर्ग माँ के हवाले करते हुए दफ्तर जातें हैं। आर्थिक दबाव और महत्वाकांक्षी के तहत पति-पत्नी कमाने में लगे होते हैं और घर तथा बच्चों का सारा दायित्व बूढ़े माँ-बाप सम्भालातें हैं।

‘तलाश' कहानी में जीवन की बारीकियों को उधेड़ने बुनने और उम्मीदों की कहानी हैं तो ‘गैरहाजरी के बावजूद' में स्त्री जीवन की आम कहानियाँ हैं ना कि व्यक्ति विशिष्ट की। गाँव, कसबे, नगरों, मोहल्लों, सोसाईटी में बिखरी आम महिलायें बगावतें, विद्रोह और संघर्ष के बिच जीवनानुभव, परिवेशगत परिस्थितियाँ और तदनुरूप आचारण कि मजबूरियाँ या मर्यादा भी हैं । ये कहानियाँ स्त्री-जीवन के उस यथार्थ को हमारे समक्ष रखती हैं जो हमारे बिच घटता हैं। ‘मेरी शिनख्त' कहानी स्त्री जीवन के उस यथार्त की मार्मिक पड़ताल हैं जिसमें पत्नी केवल पति की साया बनकर रहजाती हैं। ‘सुनो समित,सुनों सुलभ' में नारी अपने परिवार के लिए अपनी खुशियों को वार देती हैं फिर भी वह स्वतन्त्रता हासिल नहीं करती बल्कि पति और पुत्र के भविष्य को गढ़ने के लिए अपने खुद के जीवन में खालीपन और निराशा को चुनती हैं। सूर्यबाला की सभी कहानियां जीवन केन्द्रित हैं और बहुत से अनकहे मुद्दों को हमारे सामने छोड़ जाती हैं।

स्त्री होना अभिशाप नहीं, किन्तु कोई वरदान भी नहीं हैं यही साबित करती हैं, इनकी कहानियों में हर स्त्री के जीवन में परिस्थितियाँ मजबुरियाँ विकराल रूप धारण कर इस तरह जकड लेती हैं कि कुछ सुझाता नहीं हैं। लेकिन समझदारी, विवेक, सहृदयता, संवेदनशीलता के साथ डटकर सामना करती नजर आती हैं। ‘तिलिस्म' में तीन पीढ़ीयों के बदलाव बखूबी सामने आंतें हैं तो ‘अंतर्हीन' बहती ममता का यथार्थ भी समझ में आता हैं। ‘दादी की रिमोट'में हमारे सामने अमूर्त मूल्यों की छाया उकेर के रख देती हैं, एक समृद्ध परिवार समाज के भय से बूढ़ी दादी को बाहर नहीं फ़ेंक सकता हैं मार्मिक चित्रण हैं। ‘क्या मालूम मैं' में अतीत और स्मृतियों का प्यार भरा किन्तु बदलते मुल्यों का सजीव चित्रण हैं। ‘पूर्णाहुति' में सरोंकारों के प्रति प्रतिबद्ध मन खुलता हैं तो ‘चिड़ियाँ जैसी मैं' में रिश्ते की गरिमा का चित्रण हैं। ‘जश्न' में बूढ़े की पीड़ा को बखूबी उभारा गया हैं जिसमें शादी की आदर्श शताब्दी बगैर जश्न मनाये जानते हैं। ‘मातम' में जिन महिला के पति का देहांत हुआ हैं उनके राय लिए बिना ही उनके घर के बारे में फैसले लिए जातें हैं। न किन्नी न, सुम्मी की बात,आदमकद ,गीता चौधरी का आखरी सवाल, एक स्त्री के कारनामें, सुमित्रा की बेटियाँ आदि कहानियाँ स्त्री संसार की प्रतिध्वनियाँ हैं जो श्रम, मातृत्व, दायित्व और कर्मठता की मिसाल खड़ी करती हैं। अत्यंत साधारण सूरत वाली स्त्रीयाँ

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

अपने कर्मठता से स्वयं का संसार रचती और बसाती नजर आती हैं।

सूर्यबाला की कहानी की नारी डटकर मुश्किल से मुश्किल चुनौतियों का सामना करना, बाजारवाद के सामने भी न झुकना, निराशा में घिरकर भी आशा बनाये रखना और तुफानो में भी दीप जलाये रखना यानी अंतिम सांसों तक डटकर रहना आदि हर कहानी के नारी में कूट कूट के भरे हुए गुण सहजता से मिलाजातें हैं। जैसे 'मुक्ति पर्व' कहानी में इमानदार वरिष्ट वैज्ञानिक डी.के गलत आरोपों की साजिशों का शिकार हो जाता हैं। उसकी मृत्यु के दस वर्षों बाद लगातार केस लड़ने के बाद आदालत अपने फैसले में डी.के को बेकसूर का फैसला सुनाती हैं। दिवंगत पति की आरोप-मुक्ति ,पत्नी माधवी के जीवन की सबसे बड़ी विडंबना भरी उपलब्धि होती हैं। इनकी सभी नारियां अपने अपा से संगर्ष शील और सादा एक न एक समस्या से ग्रस्त लेकिन सदा उन समस्याओं से लड़ने का सतत प्रयत्न कहानी को निरंतरता प्रदान करती हैं। नारी अपने आप को अपराध बोध समझती हैं कहानी में नारियों का कोई दोष नहीं होता हैं फिर भी दोष इन्ही का होता हैं यह कोई और नहीं खुद कहानी की नारियां अपने आप को अपराध बोध समझती हैं।

अपने परिवार के सदस्यों के लिए उनके सुख के लिए अपने सारे सपने और अपना सारा जीवन तक त्याग करने वाली गुणों की नारी कहानियों में चित्रित हैं जो साहित्य की उच्च कोटि नारी भी कहलातीं हैं। सूर्यबाला जी के सभी कहानियों में नारी कष्ट झेलती हैं लेकिन हारती नहीं, निरंतर कष्टों को दूर करने के प्रयत्न में हमेश तत्पर रहती हैं। कभी-कभी इनको आवाज भी उठानी पड़ता हैं लेकिन कभी पीछे नहीं हटती हैं, आवश्यकता होने पर जवाब भी देती हैं। सबसे बड़ी से बड़ी पीड़ा को सहन करतें हुए चुनौतियों का सामना करते हुए हार कर भी जितने में प्रयत्नशील रहती हैं, जो अपने आप को अपराधबोध समझती हैं। इस तरह सूर्यबाला जी कि काहानियों में नारी अपने आप को अपराधबोध समझ कर आगे का रास्ता प्रशस्त करती हुई आगे बढती हैं।

सूर्यबाला ने सामाजिक विद्रूपताओं को गहरी अंतरदृष्टि के साथ उद्घाटित किया हैं। उन्होंने मध्यमवर्गीय समाज के चिर-परिचित यथार्थ को उजागर करती नजर आती हैं। उनकी कहानियों में कहीं-कहीं व्यंग्य भी सक्रिय दिखायी देता है साथ ही साथ वर्ग चेतना को उद्घाटित करने के प्रयास भी नजर आता हैं। तो दूसरी तरफ सामाजिक अन्तर्विरोधों की गहरी पहचान कराती हुई सक्रिय हैं। सूर्यबाला जी की कहानियों की हर नारी अपने आप को अपराध बोध समझती हैं क्योंकि उनमें एक संस्कृति का परिवेश हैं जो उन्हें अपने अपाको जलाकर भी अपने परिवार को सुखी देखना चाहती हैं। नारी परम धर्म अपने परिवार और परिवार के सद्सों का देखभाल करना समझती हैं। इसका मतलब यह नहीं की नारी बंधन में जकड़ी हुई हैं लेकिन उस जकड़न से ज्यादा नारी अपने परिवार के सुख और हित को महत्व देती हैं। लेकिन जब उसके खिलाफ हद से अधिक कुछ गलत होने लगता हैं तो वह आवाज भी उठाती हैं। अपने अधिकार को, स्वतंत्रता को बरकरार रखने की कोशिश में जलती, झुझती अपमानित होकर भी सतत प्रयत्नशील के दिशा में अग्रसर होती नजर आती हैं।

महत्वपूर्ण टिपण्णी

- इन कहानियों में जहाँ एक तरफ मानवीय संवेदनाओं को मनोवैज्ञानिक तत्वों पर रेखांकित करने का प्रयास हैं तो वहीं दूसरी तरफ मूल्यहीनता, भ्रष्टता, सांप्रदायिक संकीर्णता, आर्थिक विपन्नता, मानवीय संबंधों की कृत्रिमता, अमानवीय स्वार्थपरता स्पष्ट चित्रण भी देखने को मिलता हैं।
- इनकी सभी कहानियों में नायिकाएँ निष्काम कर्मयोगी हैं उनकी कर्मनिष्ठा और पुरुषार्थ के आगे सभी नायक बैने दिखाई देतें हैं।
- कुछ कहानियों में पुरुष प्रधान व्यवस्था के प्रति नारी के आक्रोश और विद्रोह भाव की अभिव्यक्ति हुई हैं
- सूर्यबाला की सभी कहानियां जीवन केन्द्रित हैं और बहुत से अनकहे मुद्दों को हमारे सामने छोड़ जाती हैं।
- कहानियाँ स्त्री संसार की प्रतिध्वनियाँ हैं जो श्रम, मातृत्व, दायित्व और कर्मठता की मिसाल खड़ी करती हैं। अत्यंत साधारण सूरत वाली स्त्रीयाँ

अपने कर्मठता से स्वयं का संसार रचती और बसाती नजर आती हैं।

संदर्भ सूची

1. साँझावती कहानी संग्रह – सूर्यबाला
2. कात्यायनी संवाद कहानी संग्रह- सूर्यबाला
3. पाँच लम्भी कहानियाँ – सूर्यबाला
4. गृह प्रवेश कहानी संग्रह – सूर्यबाला
5. एक इंद्राधनुष जुबेद के आम – सूर्यबाला
6. थाली भर चाँद कहानी संग्रह – सूर्यबाला
7. एक टुकड़ा कस्तूरी – सूर्यबाला
8. दिशाहीन – सूर्यबाला

© RRIJM 2015, All Rights Reserved